सुभद्रा सेनगुप्ता

दाल लज़ीज़

लखनऊ की एक छोटी-सी गली में सादिक अपने पिता के होटल में बैठा बिरयानी की प्लेट से मक्खियाँ भगा रहा था। अचानक उसकी नज़र घोड़े से उतरते एक शख्स पर पड़ी। वह उसी की ओर आ रहा था। साथ में दो नौकर भी थे।

आदमी देखने में रईस लग रहा था। उसे अपनी ओर आता देख सादिक को आश्चर्य हुआ। उस वक्त सादिक के अब्बा मोहम्मद कादिर अँगीठी पर कबाब पका रहे थे। इतने में दो में से एक नौकर दुकान पर आया और बोला, "नवाब हसन अली साहब आए हैं।"

रेश्मी अचकन पहने नवाब दुकान में आए और कादिर से बोले, "हमने सुना है कि तुम बहुत अच्छे खानसामा हो। कौन-सा पकवान सबसे लज़ीज़ बनाते हो? हम उसे चखना चाहेंगे।"

"दाल।" इतना कहकर कादिर कबाब पकाने में लग गए।

"दाल, सिर्फ दाल?" नवाब साहब ने आश्चर्य से पूछा।

"मैं बिरयानी, कोरमा और भी कई तरह के मज़ेदार पकवान बनाता हूँ, लेकिन आपने सबसे लज़ीज़ पकवान के बारे में पूछा था। इसलिए मैंने दाल कहा।" कादिर ने कहा।

"केवल दाल? हमारे दोस्त तो यहाँ के पूरे खाने की काफी तारीफ करते हैं। इसीलिए तो हम यहाँ चले आए।"

"लेकिन आपने मेरे हाथों बनी दाल अभी चखी कहाँ है?"

"ठीक है। हम इस खास दाल को ज़रूर चखना चाहेंगे। तुम कौन-सी खास दाल बनाते हो?"

"उड़द की।"

"ठीक है, खिलाइए। देखते हैं, इसमें क्या खास है।"

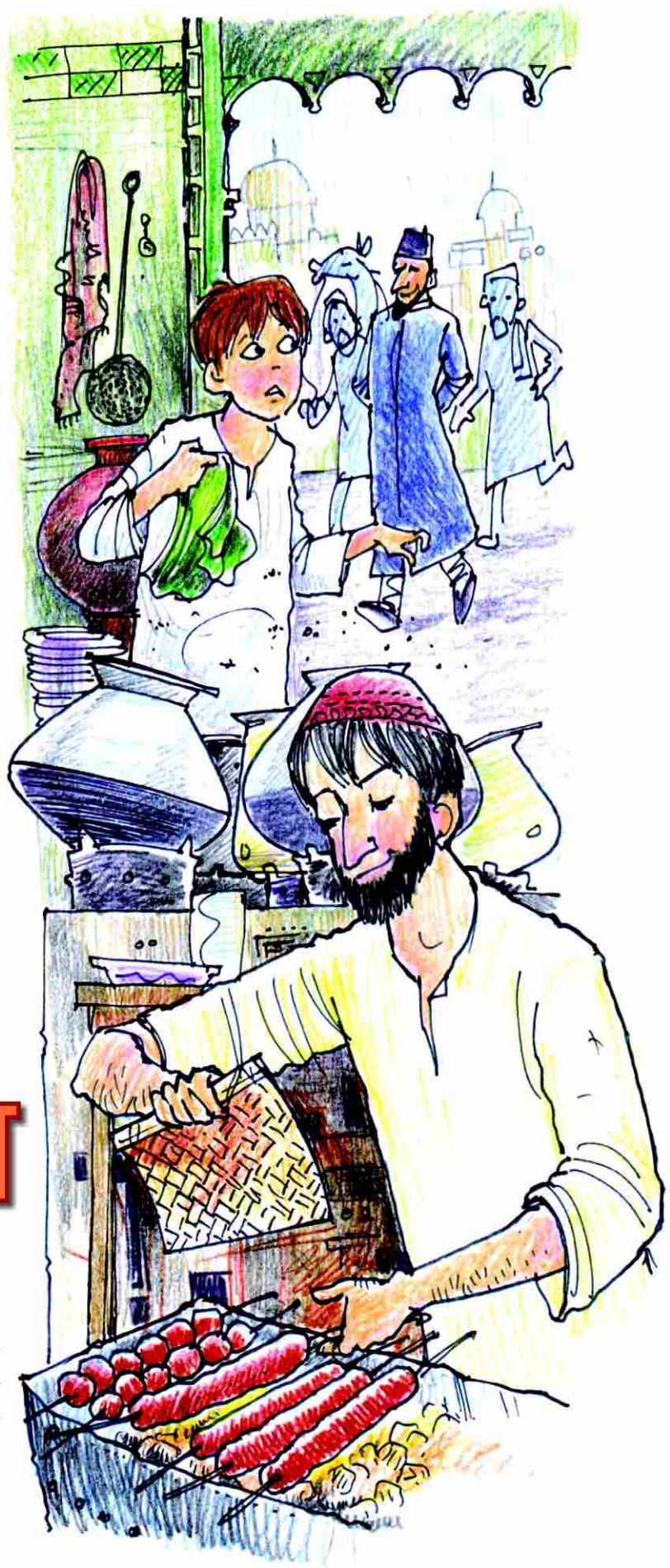

"लेकिन दाल अभी तैयार नहीं है जनाब।"

"क्या....?" नवाब साहब गुस्से में बोले।

"इस खास शाही उड़द दाल को मैं केवल ऑर्डर पर ही बनाता हूँ। इसमें बड़े खास मसाले डलते हैं। बनाने में पूरा एक दिन लग जाता है। यदि आप चाहें तो मैं कल दोपहर तक इसे आपके लिए बना सकता हूँ।" कादिर बोला।

"ठीक है, कल तुम यह दाल बनाकर हमारे घर ले आना।" नवाब ने कहा।

"ऐसा न हो पाएगा जनाब।" कादिर बोले।

"क्यों, इसमें क्या परेशानी है?"

"हुज़ूर, मेरी बनाई दाल का स्वाद लेने के लिए तो आपको यहीं मेरी दुकान में ही आना होगा और उसे तुरन्त खाना होगा।" कादिर बोला।

"और अगर हमें आने में देर हो गई तो?" नवाब ने पूछा।

"तो मैं वह दाल या तो गरीबों में बाँट दूँगा या फेंक दूँगा।" कादिर ने दो टूक जवाब दिया।

सादिक अपने अब्बा और नवाब की बातें सुन रहा था। अब्बा के स्वभाव से वह वाकिफ था। इसी वजह से उसके अब्बा कई अच्छे ग्राहक खो चुके थे। नवाब हसन अली भी इससे पहले इतने अकड़ू खानसामे से नहीं मिले थे। उन्होंने सोचा चलो इसकी दाल एक बार चख ही ली जाए। "ठीक है, कल जब तुम्हारी शाही दाल बन जाए तो हमें खबर कर देना।" कहते हुए नवाब चल दिए।

सादिक ने राहत की साँस ली। उसे डर था कहीं अब्बा की बातें सुनकर नवाब साहब नाराज़ होकर वहाँ से चल न दें। नवाब अच्छे खाने के शौकीन थे। सादिक ने सुन रखा था कि लज़ीज़ खाने से खुश होकर वे खानसामों को अच्छी-खासी बख्शीश दिया करते थे। उसे उम्मीद थी कि नवाब साहब को दाल पसन्द आ गई तो वे इसके एवज़ में भी अच्छा-खासा इनाम देंगे।

शाही उड़द दाल में डलने वाले मसालों की खरीद के लिए शाम को सादिक अपने अब्बा के साथ बाज़ार गया।

"आदाब कादिर मियाँ, कहो, कैसी चल रही है खरीददारी?" यह वही नौकर था जो सुबह नवाब के साथ आया था।

"आदाब।" कहकर कादिर फिर खरीददारी में जुट गया। उसे बेकार की बातचीत पसन्द न थी। लेकिन सादिक ने उसकी ओर देख मुस्कुराकर कहा, "लगता है आपके नवाब साहब को खाने का बड़ा शौक है।"

"हाँ, बहुत ज़्यादा।" नौकर ने हँसते हुए कहा। "वे हमेशा नए-नए पकवानों का ज़ायका लेने के लिए दुकानों पर जाते रहते हैं। अगर कुछ पसन्द आ गया, तो क्या कहना। वे इसके लिए खानसामे को बढ़िया बख्शीश देने से भी नहीं चूकते।"

"सचमुच?" सादिक ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "क्या देते हैं वे इनाम में?"

"नवाब साहब बेहद रईस हैं। एक बार तो उन्हें पुलाव-पसन्दा इतना अच्छा लगा कि खानसामे को नई दुकान ही खरीदकर दे दी। एक दूसरे बावर्ची को हीरे की अँगूठी दे दी।" नौकर ने कहा।

इतने में अब्बा ने सादिक को आवाज़ लगा दी। रास्ते भर वह दाल के बदले में मिलने वाले इनाम के बारे में ही सोचता रहा। उसे पता था कि उसके अब्बा की बनाई शाही दाल उतनी ही उम्दा होती है जितना किसी और खानसामे का बनाया पुलाव-पसन्दा या कोई दूसरा सालन।

अगली सुबह सादिक अपने पिता के साथ दुकान पहुँचा। और उन्हें दाल साफ करने, घी बनाने, हल्दी कूटने, प्याज़, लहसुन, अदरक आदि काटने में मदद करने लगा। इसके बाद वह अपने अब्बा को दाल बनाते हुए देखने लगा। कादिर ने दाल के साथ ककड़ी का रायता, पुदीने की चटनी, आलू-फूलगोभी की सब्ज़ी, नर्म-मुलायम काकोरी कबाब भी बनाए। गरमा-गरम तन्दूरी रोटी परोसने का भी बन्दोबस्त कादिर ने किया था। मीठे में फिरनी तैयार की गई थी जो नवाब को बहुत पसन्द थी।

सब कुछ तैयार था। हाण्डी में रखी दाल धीमी आँच पर उबल रही थी। रोटी के लिए आटे की लोइयाँ भी बना ली गई थीं। मिट्टी के बर्तन में रायता ठण्डा हो रहा था। कादिर ने सादिक से कहा, "जाओ, नवाब साहब को बुला लाओ। कहना खाना तैयार है।"

यह सुनकर सादिक नवाब हसन अली की हवेली की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने नौकर से कहा, "मैं नवाब साहब को खाने के लिए

के लिए बुलाने आया हूँ। दाल तैयार है।"

"छत पर चले जाओ। नवाब साहब वहाँ पतंग उड़ा रहे हैं।" नौकर ने जवाब दिया।

सादिक सीढ़ियाँ चढ़ छत पर जा पहुँचा। वहाँ नवाब अपने दोस्तों के साथ पतंग उड़ा रहे थे।

सादिक नवाब के पास गया और धीरे-से बोला, "नवाब साहब, चलिए दाल तैयार है। मेरे अब्बू आपको बुला रहे हैं।"

वहाँ खड़े नवाब के एक दोस्त ने कहा, "हसन, दाल को भूल जाओ। ज़रा अपनी पतंग पर ध्यान दो। हरी पतंग तुम्हारी पतंग को काटने ही वाली है।"

"ज़रा रुको, हम खुद ही उसे काट देते हैं।" नवाब ने डोर खींचते हुए कहा।

सादिक अपने अब्बा के गुस्से को जानता था। उसने फिर कहा, "चलिए, नवाब साहब खाना तैयार है।"

"हाँ, हाँ चलता हूँ।" हसन अली ने सादिक को नज़रअन्दाज़ करते हुए कहा। "अपने अब्बू से कहो, ज़रा इन्तज़ार करें। देखते नहीं, हमारी पतंग खतरे में है?"

"भाग जाओ बच्चे, नवाब साहब अभी व्यस्त हैं।" हसन अली के दोस्त ने कहा।

सादिक चला आया। उसे अपने सपने टूटते लगे। वह जानता था कि आगे क्या होने वाला है। जब अब्बा सुनेंगे कि नवाब साहब ने पतंग उड़ाने के चक्कर में यहाँ आने से इंकार कर दिया है तो वे बहुत नाराज़ होंगे। और गुस्से में सारी दाल भिखारियों में बाँट देंगे। इनाम को तो अब भूलना ही बेहतर है। वह रुआँसा-सा हो गया।

चुपचाप मुँह लटकाए वह घर की ओर रवाना हो गया।

उसने आसमान की ओर देखा। नवाब साहब की पतंग उसके सिर के ऊपर ही उड़ रही थी। उसने देखा कि उसका दोस्त अमन भी पतंग उड़ा रहा है। अमन की पतंग नवाब की पतंग के बिल्कुल नज़दीक थी।

अचानक सादिक के दिमाग में एक तरकीब आई। वह दौड़ता हुआ अमन की छत पर पहुँचा और बोला, "अमन, क्या तुम मेरी एक मदद करोगे? वह नीली चमकीली पतंग देख रहे हो ना, उसे जल्दी से काट दो।"

"बिल्कुल, इसमें क्या दिक्कत है।" अमन बोला। अमन पतंग उड़ाने में बड़ा माहिर था। उसने पिसे काँच व सरस से एक खास तरह का माँजा तैयार किया था। इससे वह किसी भी पतंग को आसानी से काट सकता था। सादिक अमन से पतंग काटने को कहकर नवाब की हवेली की ओर दौड़ पड़ा।

वह दौड़ता हुआ नवाब साहब की छत पर जा पहुँचा। उसने देखा कि अमन की पतंग नवाब साहब की पतंग के पास जा पहुँची थी। अचानक अमन ने ज़ोर से डोर खींची। नवाब साहब की पतंग कट चुकी थी।

"ओह, नहीं।" नवाब निराश होकर ज़मीन पर बैठ गए।

सादिक के लिए यह अच्छा मौका था। उसने धीरे से कहा, "जनाबे आली, खाना तैयार है और दाल सचमुच में बहुत उम्दा बनी है।"

सादिक की यह बात सुनकर नवाब को अचानक लज़ीज़ दाल याद हो आई। वे बोले, "अरे हाँ। हम तो भूल ही गए थे। चलो खाना खाया जाए।" कहते हुए वे कादिर की दुकान की ओर चल पड़े।

कादिर की दुकान में उनके बैठने का खास इन्तज़ाम किया जा चुका था। उनके बैठते ही कादिर ने अपना खास पकवान दाल और दूसरी चीज़ें परोसीं। सादिक मक्खन लगी गरमा-गरम तन्दूरी रोटियाँ लेकर आया।

जैसे ही नवाब साहब ने रोटी का पहला निवाला शाही उड़द दाल में डुबोकर अपने मुँह में डाला, उनकी आँखें

चमक उठीं, "वाह, क्या दाल है... !" उन्होंने सभी पकवान बड़े शौक से चखे और बोले, "वाह कादिर मियाँ, आपकी दाल तो वाकई कमाल की है। हमने इससे पहले ऐसी दाल कभी नहीं खाई। इससे बेहतर तो कुछ हो ही नहीं सकता। इसके लिए तो आप वाकई इनाम के हकदार हैं। बताइए, आपको क्या चाहिए?"

यह सुनकर मोहम्मद कादिर मुस्कुराए और बोले, "मैं इमामबाड़ा के पास एक बड़ा-सा होटल खोलना चाहता हूँ, हुज़ूर।"

"ठीक है।" इतना कहकर उन्होंने अपने नौकर को बुलवाया और नोटों से भरा एक झोला कादिर मियाँ को देने के लिए कहा।

"हमारे ख्याल से इतने पैसे काफी होंगे होटल के लिए।" नवाब हसन अली बोले।

एक सवाल

8

2 5 2

1 2 4 2 1

1 2 1 3 1 2 1

1 2 1 1 ? 1 1 2 1

यह है संख्याओं का पिरामिड। इसकी सबसे निचली लाइन में एक प्रश्नचिन्ह है। इस प्रश्न चिन्ह की जगह कौन-सी संख्या भरना ठीक होगा, और क्यों?

सादिक को अपनी शरारत पर हँसी आ रही थी। उसने सोचा अब वे भी अमीर बन जाएँगे। वह बाद में अब्बू को सब कुछ बता देगा कि कैसे उनके गुस्सा होने से पहले ही वह सही समय पर नवाब साहब को दुकान पर ले आया। वह जानता था कि अब्बू सारी बात जानकर हँस पड़ेंगे और खुश होकर उसे पैसे देंगे। शायद एक पूरी मोहर ही मिल जाए। फिर वह और अमन उससे ढेर सारी पतंगें खरीदेंगे और कुल्फी या फालूदा खाएँगे।

उधर, नवाब हसन अली लज़ीज़ दाल खाए जा रहे थे और इधर सादिक लगातार अपनी सफलता पर मुस्कुराए जा रहा था। चकमक

चित्रः जोएल गिल

देखो तो, इस पेड़ पर कितने पक्षियों का बसेरा है?

चित्र: प्रितेन्द्र ठाकुर